International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

COPY RIGHT

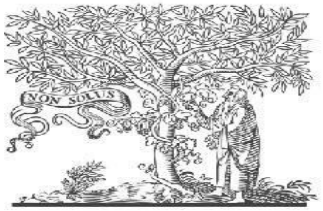

ELSEVIER SSRN

2023 IJIEMR. Personal use of this material is permitted. Permission from IJIEMR must be obtained for all other uses, in any current or future media, including reprinting/republishing this material for advertising or promotional purposes, creating new collective works, for resale or redistribution to servers or lists, or reuse of any copyrighted component of this work in other works. No Reprint should be done to this paper, all copy right is authenticated to Paper Authors

IJIEMR Transactions, online available on 05th Aug 2023. Link :http://www.ijiemr.org/downloads.php?vol=Volume-12&issue=Issue 08

10.48047/IJIEMR/V12/ISSUE 08/70

Title ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल स्तर के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

Volume 12, ISSUE 08, Pages: 476-481

Paper Authors **डॉ. माधुरी पालीवाल**

USE THIS BARCODE TO ACCESS YOUR ONLINE PAPER

To Secure Your Paper As Per UGC Guidelines We Are Providing A Electronic Bar Code

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल स्तर के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. माधुरी पालीवाल,
प्राचार्य, शारीरिक शिक्षा संस्थान ग्राम चाटली सेंधवा

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध 'ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल स्तर के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन' एक सर्वेक्षण ¼Survey½ प्रकार का शोध था, जिसमें मध्यप्रदेश के हाईस्कूल स्तर के आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के कुल 415 चयनित न्यादर्श पर शोध कार्य किया गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अग्र था-ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आरक्षित वर्ग, लिंग एवं उनकी अन्तर्क्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर प्रभाव का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध की अग्र परिकल्पना थी -ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आरक्षित वर्ग, लिंग एवं उनकी अन्तर्क्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा। प्रस्तुत शोध की जनसंख्या बड़वानी जिले के हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थी थे। इस जनसंख्या में से विद्यालय का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा तथा इन चयनित विद्यालयों में शोधिका की सुविधा अनुरूप न्यादर्श का चयन किया गया। शोध में शैक्षिक समस्याओं से संबंधित प्रदत्त शोधिका द्वारा स्वनिर्मित शैक्षिक समस्या आकलन प्रश्नावली के उपयोग द्वारा प्राप्त किए गए। प्रस्तुत शोध के प्रदत्त विश्लेषण हेतु उद्देश्य अनुरूप द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध से अग्र निष्कर्ष प्राप्त हुए- 1. आदिवासी वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याऐं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं से सार्थक रूप से अधिक पायी गयी। 2. आदिवासी वर्ग के छात्रों की शैक्षिक समस्याएॅं पिछड़े वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं से सार्थक रूप से अधिक पायी गयी। एवं 3. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आरक्षित वर्ग एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत में गाँवों की अनेकता होते हुए भी, एकता की छाप दिखाई देती है। भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है। चुँकि कुल जनसंख्या का 75 प्रतिशत भाग गाँवों में निवास करता है, इसलिए उनके विकास पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। भारत की अर्थव्यवस्था गाँवों पर निर्भर है, इसलिए राष्ट्र की उन्नति के लिए गाँवों का विकास अनिवार्य है। वर्तमान में गाँव आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षिक रुप से काफी पिछड़े हुए हैं। इन समस्याओं का विस्तृत क्षेत्र होने के कारण, इसका अध्ययन एवं समस्याओं का निवारण का क्षेत्र शोधिका द्वारा चयनित किया गया।

किसी भी मनुष्य के लिए शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा विहीन मनुष्य पशु के समान होता है। मानव के सर्र्वांगीण विकास हेतु शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। विशेष रुप से हम बात करें, ग्रामीण क्षेत्र के आदिवासी एवं अन्य पिछड़ा वर्ग, जिनका जीवन अत्यन्त निम्न कोटि का है। यहाँ शिक्षा के अभाव में ये सभी क्षेत्रों में पिछड़े हुए हैं। बच्चे भी या तो अप्रवेशित रह जाते हैं या प्राथमिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते स्कूल छोड़ देते हैं। माता पिता स्वयं अशिक्षित होने से इस ओर ध्यान नही दे पाते हैं। ये बच्चे अशिक्षित क्यो हैं? उनके आगे

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

पढ़ाई जारी न रखने के पीछे वास्तविक कारण क्या हैं ? क्या उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि या उनकी अध्ययन आदतें, पठन अवबोध, सृजनात्मकता या शैक्षिक समस्या से संबंधित कारण, जो उनकी प्रगति के मार्ग में बाधक बन रहे है, इन सभी का अध्ययन शोध के माध्यम से कर अशिक्षित समाज को ज्ञानवर्धक एवं उन्नति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। इसे ही ध्यान रखते हुए शोधिका द्वारा यह क्षेत्र चुना गया।

सिन्हा (1972), त्रिवेदी एवं पटेल (1973), वेदावल्ली (1976), नायर (1978), क्रिष्चन (1983),यशोमति (1985), सिंह (1991), मिश्रा (1992), पण्डा (1992), स्टेला एवं पुरूषोत्तम (1983), वर्मा (1996), चैहान (2003), बसप्पा (2003), नंदिता एवं तनिमा (2004), मिश्रा एवं सिन्हा (2007), विजय (2007), षैली (2008), पुरकर, मिश्रा एवं सिन्हा (2008), पूरी एवं कुमारी (2010), राधिका (2011), टोपे (2011), धर (2011), काले (2011), वसंती एवं सूथरमन (2011), सिंह (2011) आदि के द्वारा किए गए पूर्व शोधो के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जनजाति एवं पिछडा वर्ग के विद्यार्थियों का शैक्षिक समस्याओं के संबंध में कोई तुलनात्मक शोधकार्य नहीं पाया गया है, अतः उपरोक्त तथ्य को ध्यान मे रखते हुए प्रस्तुत शोध शीर्षक ‘‘ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल स्तर के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन का शोधिका द्वारा चयन किया गया है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन अग्र है -

ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल स्तर के आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य अग्र था-

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आरक्षित वर्ग, लिंग एवं उनकी अन्तक्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध की अग्र परिकल्पना थी -

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आरक्षित वर्ग, लिंग एवं उनकी अन्तर्क्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध की अग्र परिसीमाएँ थी-

1. प्रस्तुत शोध सीमित संख्या 415 के न्यादर्श पर किया गया।
2. शोध में केवल लिंग एवं शैक्षिक समस्याओं परिवर्तियों से संबंधित प्रदत्त का उपयोग किया गया।
3. शोध में केवल हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का चयन किया गया।
4. शोध हेतु केवल बड़वानी जिले से न्यादर्श का चयन किया गया।
5. प्रस्तुत शोध में केवल हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों का ही अध्ययन किया गया।
6. प्रस्तुत शोध में शैक्षिक समस्या के आकलन हेतु शोधिका द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।
7. केवल ग्रामीण क्षेत्र के आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों पर शोध कार्य किया गयज्ञं

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या बड़वानी जिले के हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थी थे। इस जनसंख्या में से विद्यालय का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा तथा इन चयनित विद्यालयों में शोधिका की सुविधा अनुरूप न्यादर्श का चयन किया गया। न्यादर्श का चयन सेंधवा एवं निवाली तहसील से किया गया। हाईस्कूल स्तर

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

के कुल 415 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों में 221 छात्र एवं 194 छात्राओं का चयन किया गया। इन विद्यार्थियों में केवल आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। इन विद्यार्थियों में सभी विद्यार्थी हिन्दी माध्यम के थे और वे माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल म.प्र. में अध्ययनरत विद्यार्थी थे। इन विद्यार्थियों में सभी विद्यार्थियों का सामाजिक आर्थिक स्तर लगभग एक जैसा था। शोध कार्य हेतु केवल ग्रामीण आवासीय पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

प्रस्तुत शोध हेतु तालिका 1 के अनुसार न्यादर्श का चयन किया गया-

तालिका 1- लिंग वार एवं आरक्षण स्तर वार न्यादर्श को दर्शाती तालिका

लिंग	हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थी		कुल
	आदिवासी वर्ग	पिछड़ा वर्ग	
छात्र	119	102	221
छात्राएँ	107	87	194
कुल	226	189	415

इस प्रकार कुल 415 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें से कुल 226 आदिवासी वर्ग एवं 189 पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का चयन किया गया। सभी विद्यालयों से दोनों लिंग के विद्यार्थी सम्मिलित किए गए थे। इन विद्यार्थियों की उम्र 13-17 वर्ष के मध्य थी।

शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण (Survey½ प्रकार का शोध था, जिसमें मध्यप्रदेश के हाईस्कूल स्तर के आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के कुल 415 चयनित न्यादर्श पर मानकीकृत उपकरणोंं का प्रशासन किया गया। प्रस्तुत शोध के मानदण्ड (आश्रित) एवं स्वतंत्र परिवर्ती अग्र प्रकार हैं-

1. **मानदण्ड परिवर्ती**- प्रस्तुत शोध में ''शैक्षिक समस्याऐ '' मानदण्ड परिवर्ती था।
2. **स्वतंत्र परिवर्ती-** प्रस्तुत शोध में हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों का ''आरक्षण स्तर'' एवं ''विद्यार्थियों का लिंग' स्वतंत्र परिवर्ती थे। विद्यार्थियों के आरक्षण स्तर में दो स्तर आदिवासी वर्ग एवं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था। विद्यार्थियों के लिंग के दो स्तर छात्र एवं छात्रा थे।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समस्याओं से संबंधित प्रदत्त एकत्रित किए गए। प्रस्तुत परिवर्ती के आकलन हेतु शोधिका द्वारा स्वनिर्मित शैक्षिक समस्या आकलन प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालयों के प्राचार्यों से शोध कार्य हेतु अनुमति ली गयी। इसके पश्चात् संबंधित विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित किये गए और उन्हंे शोध का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए यह बताया गया कि इस शोध का आपकी शैक्षणिक उपलब्धि से कोई संबंध नहीं है और आपसे प्राप्त प्रदत्त को गोपनीय रखा जावेगा तथा केवल शोध कार्य में उपयोग किया जावेगा। इसके पश्चात् शैक्षिक समस्याओं के आकलन हेतु परीक्षण का प्रशासन किया गया। इस उपकरण के प्रशासन के पश्चात् विद्याार्थियों से उत्तर-पत्रक एकत्र किए गए। तत्पश्चात् परीक्षण की हस्त-पुस्तिका में दी गई प्रक्रिया अनुरूप फलांकन किया गया। इस प्रकार दोनों आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक समस्याओं से संबंधित प्रदत्त को एकत्र कर लिया गया।

International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के प्रदत्त विश्लेषण हेतु उद्देश्य अनुरूप ग्रामीण क्षेत्र के आरक्षित वर्ग, लिंग एवं उनकी अन्तर्क्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर प्रभाव के अध्ययन हेतु द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण ;ज्ूव ूंल ।छव्ट।द्ध का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से अग्र निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. आदिवासी वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याऐं पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं से सार्थक रूप से अधिक पायी गयी।
2. आदिवासी वर्ग के छात्रों की शैक्षिक समस्याएॅं पिछड़े वर्ग की छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं से सार्थक रूप से अधिक पायी गयी।
3. ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आरक्षित वर्ग एवं लिंग की अन्तर्क्रिया का शैक्षिक समस्याओं पर सार्थक प्रभाव पाया गया ।

भविष्य में शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध के आधार पर भविष्य में अन्य शोधकर्ता हेतु अग्र सुझाव हैं-

1. प्रस्तुत शोध कार्य शहरी परिवेश के विद्यार्थियों के साथ किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य शहरी व ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य विशिष्ट बच्चों जैसे- दिव्यांग, प्रतिभाशाली, मानसिक चुनौती वाले, अधिगम निर्योग्य, सृजनात्मक, सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अपवंचित बच्चों पर किया जा सकता है।
4. अन्य परिवर्तियों जैसे- अभिक्षमता, तार्किक योग्यता, आकांक्षा स्तर, व्यक्तित्व, मूलभूत शैक्षिक संकाय आदि पर शोध किया जा सकता है।
5. हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के साथ उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के साथ तुलना कर यह शोध कार्य किया जा सकता है।
6. अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श और मध्यप्रदेश अन्य जिलों या मध्यप्रदेश के बाहर प्रस्तुत शोध कार्य को दोहराया जा सकता है।
7. प्रस्तुत शोध कार्य को अन्य आरक्षित वर्ग जैसे अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों या तीनों आरक्षित वर्गों अर्थात् अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के साथ दोहराया जा सकता है।

lanHkZ xzaFk &lwph [Bibliography]

1. गैरेट, एच. ई.: शिक्षा मनोविज्ञान में साँख्यिकी के प्रयोग. नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिशर्स, 2007.
2. **Buch M.B. (Ed.) :** First survey of research in Education. Baroda: Centre of Advance study in Education, 1974.
3. **Buch M.B. (Ed.) :** Second survey of research in Education.(1972-1978). Baroda: Society for Educational Research and Department, 1979.
4. **Buch M.B. (Ed.) :** Third survey of research in Education.(1978-1983). New Delhi : NCERT, 1986.
5. **NCERT:** Forth Survey of Research in Education (1983-1988). New Delhi : NCERT, 1991.

6. **NCERT:** Fifth Survey of Research in Education (1988-1992). New Delhi : NCERT, 2000.
7. **NCERT:** Sixth Survey of Research in Education-Vol I. New Delhi : National Council of Educational Research and training, 2006.
8. **NCERT**: Sixth survey of research in Education in Vol II. New Delhi : National Council of Educational Research and training, 2007.
9. शर्मा, व्हाय: प्रतिभा संपन्न एवं सृजनात्मक बालक पहचान, प्रकार एवं विशेषताएँ. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2012.
10. सिंह एम.ः शिक्षा मनोविज्ञान. पी.एच. पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 2010.
11. सिंह एन. एवं अरोडा, पी.ः शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ. पद्मा पब्लिकेशन, जयपुर, 2008.
12. गेरेट, ई. एच,ः शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग. कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1995.
13. पाल, एच. आर., पाल, आर, एवं देवड़ा, आर,:प्रयोगात्मक शिक्षा मनोविज्ञान. हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2012.
14. पाल, एच. आर., एवं शर्मा, एम.: मापन आकलन एवं मूल्यांकन. क्षिप्रा पब्लिशर्स, दिल्ली, 2009.
15. शर्मा, एस. एन. एवं भार्गव, विवेक: मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रयोग $ परीक्षण. एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, कचहरी घाट, आगरा - 282004 (2006-07).
16. सिन्हा, एच. एस. एवं शर्मा, रचना: शिक्षा मनोविज्ञान. एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.
17. मंगल एस. के.: शिक्षा मनोविज्ञान. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि. नई दिल्ली, 2012.
18. माथुर, डाॅ. एस.एस.: शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2005.
19. अग्रवाल, जे.सी.: षिक्षा मनोविज्ञान. शिप्रा पब्लिकेषन, नई दिल्ली, 2013.
20. डाॅ. कमलेष व्यास, ठाकुर: पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षण (मण्डल आयोग के विषेेष संदर्भ में). अप्रकाषित पी.-एच.डी. शोध प्रबन्ध, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर.
21. डाॅ. सिलावट, पान्टेल: अनुसूचित जनजातियांे के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में पंचायती राज व्यवस्था की भूमिका. अप्रकाशित पी.-एच.डी. शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 2008.
22. डाॅ. गोयल, वर्मा: भील जनजातियांे के जीवन पर शिक्षा का प्रभाव एक समाजषास्त्रीय अध्ययन (बड़वानी जिले के संदर्भ में). अप्रकाशित पी.-एच.डी. शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 2013.
23. डाॅ. राठौड़, सोलंकी: पश्चिमी निमाड़ की जनजातियांे के गीतों का लोकतात्वीक अनुशीलन. अप्रकाशित पी.-एच.डी. शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विष्व विद्यालय, इन्दौर, 1999.
24. डाॅ. वर्मा, जमरे: भील जनजाति में पिछड़ेपन का समाजशास्त्रीय अध्ययन. देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 2014.
25. डाॅ. प्रकाष, पाटीदार: प्रवासी आदिवासी श्रमीकों का आर्थिक

विष्लेषण. अप्रकाशित एम.फिल. लघुशोध प्रबन्ध, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 2001.

26. प्रो. गांगुली. पंवार: ग्रामीण विकास स्तरों की पहचान (म.प्र. के इन्दौर जिले में महु विकास खण्ड के विशेष संदर्भ में एक विष्लेषणात्मक अध्ययन). अप्रकाशित शोध एम.फिल., स्कूल आॅफ एडवांस लिबरल स्टडीज, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 1995.
27. प्रो. वामनिया, खरे: अनुसूचित जनजाति के सामाजिक आर्थिक विकास कार्यक्रमों का अध्ययन. अप्रकाशित एम.ए. लघु शोध प्रबंध, शा. कन्या महाविद्यालय खरगोन, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 2010.
28. डाॅ. मिश्रा, दुबे: अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सश्क्तिकरण हेतु व्यूह रचना की प्रभाविकता का अध्ययन. अप्रकाशित एम.ए. लघु शेध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय, इन्दौर, 2002.